ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 86-87

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

मिर्जापुर सम्भाग के शैलचित्रों का अवलोकन

बृजेश कुमार यादव

शोध अध्येता– प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 23 .10. 2021, Revised- 27 .10. 2021, Accepted - 30.10.2021 E-mail: brijeshrdy486@gmail.com

सारांशः ***मिर्जापुर सम्भाग के आदिमानव के मन की सच्ची भावनाओं और हृदय की गहराईयों में स्थित भावनाओं की सुन्दर अभिव्यक्ति शैलचित्रों में दृष्टव्य है, जिसमें उनकी मनःस्थिति को मानवीय क्रियाओं द्वारा दर्शाया गया है। मिर्जापुर क्षेत्र अनादिकाल से कला का केन्द्र रहा है। यहाँ का मानव जब अपने आदिम अवस्था में शैल गुहाओं में रहता था, तब भी उसमें कला के प्रति प्रेम था, जिसका प्रमाण प्रागैतिहासिक काल के चित्रित शैलाश्रयों में मिल जाता***

कुंजीभूत शब्द– आदिमानव, अभिव्यक्ति शैलचित्रों, अनादिकाल, प्रागैतिहासिक काल, चित्रित शैलाश्रयों, नौकाविहार।

मिर्जापुर सम्भाग में जितनी चित्रित गुफाएँ मिली हैं, उनमें विविध प्रकार की शैलियों के चित्र प्राप्त हुए है। अधिकतर गुफाओं के चित्र पूरित या अर्द्ध–पूरित शैली में चित्रित है। नर–नारियों, जीवाकृतियों, आखेट, युद्ध आदि से सम्बन्धित चित्र बड़ी संख्या में इस क्षेत्र की गुफाओं में पाये गए हैं। 'चनाइनमान' और 'केरवाघाट' की गुफाओं में बने चित्रों को देखने से प्रतीत होता है कि आरम्भ में जो चित्र बनाये गये थे, कालांतर में जब वे मिटने लगे, तो उन पर दूसरे प्रकार के चित्र पुनः बना दिए गए। ऐसे दुबारा खचित चित्र प्रायः कत्थई रंग के बने हैं। इन चित्रों को 'दोहरे या पुनर्लेखन शैली' की संज्ञा दी जतीी है।

इन शैलचित्र गुहा चित्रों में लाल, कत्थई, काले एवं सफेद रंगो का प्रयोग किया गया है। चित्रण के लिये कभी समतल और कभी खुरदरी सतहों का एक सा उपयोग किया गया है। रंग तैयार करने के लिए गेरू, चूनापत्थर और लकड़ी का कोयला पिसकर बनाए गए चूरे में पानी, चर्बी और वनस्पतियों के रस मिलाए जाते रहे होंगे, क्योंकि घिसे हुए गेरू के चूरे में तेल, सिंदूर, सेम के छिलके और अन्यान्य वनस्पतियों के रस मिलाकर तैयार किए गए रंगों से आवासों की सज्जा के लिए चित्र बनाने की परम्परा इस क्षेत्र में अब भी प्रचलित है। चित्रण के लिए बाँस की डंडियाँ, चिड़ियों के पंख, पशुओं की हड्डियों के उपयोग से बनी तूलिकाओं का प्रयोग किया जाता रहा होगा। विन्ध्याचल की पहाड़ियों की खुदाई में चित्रित चट्टानों और गुफाओं के पास पत्थर की सिलों पर हिरोंजी के घिसे हुए पत्थर प्राप्त हुए हैं, जो आदिमानव ने चित्र बनाने के लिए रंग के रूप में प्रयोग किए थे। इन स्थानों पर प्रागैतिहासिक मनुष्य ने पूर्ण रूप से अपनी चित्र शालाएँ स्थापित कर ली थी, जिनमें वह रंग को पत्थर के ऊपर घिसकर रंग बनाकर चित्र का निर्माण करता था।

मिर्जापुर सम्भाग के शैलश्रित गुहाचित्रों में पशु–पक्षी एवं वन्य जीव आकृतियाँ, मानवाकृतियाँ, आखेट दृश्य, धनुर्धर योद्धा, अश्वारोही एवं गजारोही आकृतियाँ, नृत्य, संगीत और पूजा–अर्चना के चित्र, नौकाविहार के दृश्य तथा बस्ती, ग्राम–निवास एवं गोचारण के दृश्य प्रमुख हैं। इस क्षेत्र से प्राप्त पशु–पक्षियों एवं अन्याय जीवधारियों के प्रमुख चित्रों में – भल्दरिया में गेरूएं रंग से चित्रित 'घायल सूअर' का चित्र मिर्जापुर क्षेत्र का प्रथम प्रागैतिहासिक चित्र है। इसके अलावा लेखनियाँ में वराह, हाथी, मोर, हरिण के चित्र, मुक्खादरी में सुअर, हाथी और हिरन के चित्र, चनाइनमान में गैडा, हाथी, बारहसिंगा व बैल के चित्र, पंचमुखी में गैडा, बकरी, शेर और हाथी के चित्र, केरवाघाट के गैडा, कुत्ता, हरिण, सुअर के चित्र, सोरहोघाट में वन–महिश, कण्डाकोट में हाथी, वारहसिंगा और हिरन के चित्र पाए गए है। कोहबर शिलाश्रय (लिखनियाँ) की मयूर आकृति में समस्त प्रकृत रूप को लाल रेखाओं द्वारा ज्यामितिक अंकन अद्वितीय है, क्योंकि आदिम कलाकार ने रेखा जाल को आबद्ध करने में मूल–रूप की चेतना और कलात्मक संयम का अद्भुत परिचय दिया गया है।

मिर्जापुर सम्भाग से प्राय सभी गुफाओं में मानव आकृतियाँ नग्न बनी है, जिसमें वह आखेट, युद्ध, नृत्य, पूजा और व्यायाम करते हुए प्रदर्शित है। मनुष्यों के अधिकतर चित्र समूह में दिखाए गए हैं। मानवाकृतियाँ का चित्रण रेखाचित्र और पूरित शैली में छापे के रूप में हुआ है। अधिकांश चित्र ऐसे हैं, जिनमें केवल मानव की आकृति का आभास मात्र है। 'सोरहोघाट' (काण्डाकोट, राबर्ट्सगंज, सोनभद्र) में बैठे हुए मानव की आकृति, 'चनाइनमान' (पंचमुखी, राबर्टसगंज, सोनभद्र) में बाण–प्रहार करते, लिखनियाँ में नृत्य आदि करते, हाथ उठाकर हाँकते, नाचते–गाते, ढोल बजाते और भागते तथा बकरी चराते, 'मुक्खादरी' में बस्ती का चित्रण; राजगढ़ (चुनार) में लघु व कुटीर उद्योग का चित्रण किया गया है। इन सब बातों से स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य आखेट, युद्ध, पशुचारण, कृषि के साथ ही साथ लघु एवं कुटीर उद्योग में भी रूचि लेने लगा था। विजयगढ़ दुर्ग के दक्षिण–पष्चिम बघनार गाँव के पास स्थित 'कउआखोह' शैलाश्रित गुफा में सौ से अधिक मानवाकृतियाँ पूरित शैली में नृत्य की मुद्रा में चित्रि है। इसी गुफा में 'वीरलोरिक' का चित्र है, जो अपने दोनों हाथों में एक–एक हाथी उठाए हुए है तथा दोनों पैरों के नीचे एक–एक हाथी को दबाए प्रदर्शित है।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

वीर लोरिक, कउआखोह

गैडें का शिकार घोरमंगर

मिर्जापुर सम्भाग में आखेट के दृश्य प्रायः सभी स्थानों पर पाए जाते हैं। इसमें भी घोरमंगर में गैडे का आखेट, कण्डाकोट में साँभर का आखेट, लिखनियाँ में बारहसिंगा व हाथी का आखेट, ढोकवा महारानी में षाही का आखेट, लोहरी में मसाल लेकर बाघ का आखेट तथा विढम में पशुओं के बीच आखेटक का दृश्य आदि महत्वपूर्ण है। घोरमंगर (विजयगढ़दुर्ग) शिलाश्रय में गेरूए रंग से पूरक शैली में अंकित गैडे के शिकार का दृश्य आखेटकों की वेश–भूषा और आयुधों के स्वरूप के आधार पर नवीन प्रस्तर युगीन लगता है। 'लिखनियाँ' (अहरौरा) शिलाश्रय पर लाल गेरूएं रंग में अंकित जंगली हाथी के आखेट का दृश्य मूल रूप से अनुकृत है। इस चित्र से आदिम सभ्यता का पर्याप्त विकसित रूप सामने आता है। मिर्जापुर क्षेत्र के मुक्खादरी में युद्ध के दृश्य बड़े ही सजीव रूप में चित्रित है। कोहबर गुफा में गेरूएं रंग से एक धनुर्धर का चित्रण है जो तीन पशुओं का पीछा कर रहा है। इसी शिलाचित्र में एक आदिम युद्ध–दृश्य, जिसमें ढाल और खड्ग लेकर लड़ते हुए विचित्र वेश–भूषा वाले दो प्रतिद्वन्दी चित्रित है। लिखनियाँ में योद्धाओं के समूह–चित्र पाए गए है। अश्वारोही का एक चित्र 'महड़रिया' (अहरौरा) से मिला है, जिसमें अश्वारोही चावुक चला रहा है तथा घोड़े शीष झुकाये हुए दौड़ रहे है। घोड़े के सभी अवयव सूक्ष्म निरीक्षण और चित्रण की सजीवता एवं कुशलता का परिचय देते है। इसी प्रकार गजारोहियों का भी चित्रण किया गया है।

अश्वारोही, महड़रिया (अहरौरा)

नृत्य दृश्य, कण्डाकोट

इस प्रकार मिर्जापुर सम्भाग के शैलचित्रों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि इनमें कुछ चित्र प्रागैतिहासिक काल के है। इस दृष्टि से वनस्पतियाँ और जीवाकृतियों को आरम्भिक युग का माना जा सकता है। इसके बाद नृत्य, धनुर्धारी और फिर अश्वरोही, गजारोही आदि को माना जा सकता है। कउआखोह से प्राप्त हाथी को उठाए तथा रौंदते विशालकाय मनुष्य के चित्र का सम्बन्ध यदि वीर लोरिक से करते है तो यह चित्र पूर्वमध्यकाल या इसके बाद का ही होगा; क्योंकि वीर लोरिक को इसी युग का माना जाता है। वह कतिपय विशयवस्तु व शैलीगत भिन्नता के साथ–साथ आद्यैतिहासिक एवं ऐतिहासिक युग में भी प्रचलित रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्त, जगदीश : प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, दिल्ली, 1967, पृ0 27.
2. केसरी, अर्जुनदास : शैलाश्रित गुहाचित्र, सोनभद्र, 1995, पृ0 39.
3. तिवारी, राकेश : थिरकते शैल चित्र, लखनऊ, 1982, पृ0 19.
4. वर्मा, अविनाश बहादुर : भारतीय चित्रकला का इतिहास, बरेली, 1989, पृ0 15.
5. गुप्त, जगदीश : प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, दिल्ली, 1967, पृ0 154.
6. केसरी, अर्जुनदास : पूर्वोक्त, 1995, पृ0 71.
7. गुप्त, जगदीश : पूर्वोक्त, 1967, पृ0 185.
8. केसरी, अर्जुनदास : पूर्वोक्त, 1995, पृ0 72–73.
9. तिवारी, राकेश : पूर्वोक्त, 1982, पृ0 10.
10. गुप्त, जगदीश : पूर्वोक्त, 1967, पृ0 107.
11. घोष, मनोरंजन : रॉक पेंटिंग्स एण्ड अदर एण्टिक्विटीज ऑफ प्रीहिस्टॉरिक एण्ड लेटर टाइम्स, एम0ए0आई0, वॉ0–24, 1932, पृ0 16.

*****